● उन परिस्थितियों का वर्णन करें जिसके कारण जापान का दरवाजा खोला गया। इसका जापान पर क्या प्रभाव पड़ा ?

◆ जापान प्रशान्त महासागर में स्थित कई द्वीपों का समूह है जिसमें होक्केडो, होन्शू, शिकोकू और क्यूशू प्रमुख है। प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से यह सम्पन्न देश नहीं था। चीन के ही तरह जापान का दरवाजा भी पाश्चात्य पश्चात देशों के द्वारा खोल दिया गया और उसके साथ उसके शोषण एवं बदरबाँट की कहानी शुरु हुई। विनायक के शब्दों में चीन के ही तरह जापान अपनी राजनीतिक गौरव तथा प्रशासनिक साम्प्रभुता को पश्चिमी देशों के पैरों तले नहीं रौंदने दिया। शीघ्र ही जापान एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उदय लिया एवं एशियाई मुनरोवाद के सिद्धान्त के आधार पर एक विशाल साम्राज्य स्थापित कर वलाईड के शब्दों में Yellow peril कायम किया।

• जापान की राजनैतिक दशा - जिस समय जापान का दरवाजा खोला गया उस समय सामंती व्यवस्था थी। में डेम्यो कहलाते थे। इनके भी उपसामन्त एवं छोटे सामन्त थे। डेम्यो विनायक के शब्दों में स्वतंत्र आर्थिक राजनैतिक और सैनिक इकाई बन गये थे जिनके अलग कानून एवं रस्म रिवाज थे। इनकी एक जागीर थी। इनके सैनिकों को सामुराई कहा जाता था। इससे जापान में घोर विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति सक्रिय थी। शोगुन व्यवस्था में सभी अधिकार शोगुन के हाथों में थे और सम्राट नाम मात्र का था।

• जापानी प्रवेश द्वार का खुलना - बारहवीं सदी तक यूरोप के लोग जापान से परिचित नहीं थे। 13 वी सदी में मंगोल मार्कोपोलो पहले-पहल जापान आया। 1543 ई० में पुर्तगाली व्यापारियों ने जापान में कदम रखा। वे जापान में आग्नेय अस्त्र का वितरण करते थे। जापान इसके प्रयोग से हथियार बनाने लगे। 1549 में कुछ ईसाई पादरी यहाँ आये। 16 वीं शताब्दि में डच, अंग्रेज, स्पेनिश लोगों का आगमन हुआ। यूरोपीय व्यापारियों एवं नाविकों में डच एवं अंग्रेजों का आगमन 17 वीं शताब्दी में हुआ। फिलिपाइन्स एवं हिन्देशिया (जावा), मलक्का आदि

नागासाकी में व्यापारिक कोठियाँ कायम की गई। शुरू में ईसाई धर्म का प्रचार किया गया। जापानी सरकार-द्वारा प्रारंभ में उनपर किसी तरह का प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया।

• मिशनरियों का आगमन — पश्चिमी देशों का व्यापारिक क्रम धार्मिक मिशनरियों के प्रचार के कार्य के साथ शुरू हुआ। प्रथम मिशनरी फ्रांसीसी जेवियर के नेतृत्व में आये। वह जेसुइट सम्प्रदाय का नेता था। बाद में ईसाई सम्प्रदाय के दो नेता फ्रांसिस्कन और डोमिनिकन आये। अनेक जापानी उनसे प्रभावित होकर ईसाई धर्म मानने लगे। उनकी लोकप्रियता बढ़ाने में सामंतों से भी सहयोग मिले। ये मिशनरियाँ अपने व्यापारिक पक्ष को भी प्राप्त करने लगी। इस व्यापार में क्लाइड के शब्दों में जापानी सामन्तों ने अपना आर्थिक लाभ देखा।

• तोकुगावा का विरोध — पश्चिमी देशों का व्यापारिक एवं धर्म-प्रचार कार्य को तोकुगावा सरकार संदेह की दृष्टि से देखती थी। अतः एक आज्ञा निकालकर प्रवेश पर रोक लगा दिया गया। इससे जापान का कल्याण नहीं दिखाई पड़ता था। भारत, चीन, फिलीपीन्स में भी पश्चिमी व्यापारी इन देशों का आर्थिक शोषण करते थे और राजनीतिक हस्तक्षेप करते थे। अतः जापान को इन सम्भावित संकटों से बचाने के लिए उनका बहिष्कार आवश्यक हो गया। तोकुगावा सरकार जापान को विदेशी साम्राज्यवादी चंगुल से बचाना चाहती थी। उनके प्रवेश से जापान की राजनीतिक स्वतंत्रता और क्षेत्रीय अखण्डता भंग हो सकती थी। विदेशी लोग जापानी प्रश्न पर जापानियों से झगड़ते थे। इसके अलावे वे परस्पर भी लड़ते थे। अंग्रेज और डच व्यापारियों में ऐसी प्रतिस्पर्धा चलती थी कि वे लोग जापानी लोगों को ईसाई बनाते थे। इससे जापान की परम्परागत धार्मिक आस्था पर खतरा दिखाई पड़ रहा था। वह जापानी सरकार की अवहेलना

किया जाता था जापान की धरती पर रहते हुए अपने

को जापानी कुछ [illegible] से मुक्त समझते थे। जापानी

इस प्रकार के व्यवहार को अपना अपमान समझती थी।

अतः उस ईसाई धर्मप्रचार [illegible] धर्म-प्रचार पर रोक लगाया

के लिए 1587 ई० में लागू किया गया। जापान देवताओं का देश है ऐसा धर्म प्रचार पूजा का विरोधी है ऐसे धर्म प्रचारकों को गिरफ्तार किया गया। अंग्रेज एवं डच व्यापारियों के लिए दरवाजा खोल दिया गया। डच व्यापारियों को केवल नागासाकी बन्दरगाह पर अनुमति दी गयी।

• पश्चिमी प्रवेश का प्रयास – जापान के साथ संबंध कायम करने के लिए पश्चिमी देशों का प्रयास जारी रहा। 19 वीं सदी के आगमन के साथ भी ये देश जापान के साथ सम्बन्ध कायम करने के लिए प्रयत्नशील रहे। यूरोपीय देश व्यापारिक क्षेत्र में नये बाजार की खोज कर रहे थे। जापान भी प्रगति चाहता था। मॉरिसन के शब्दों में "इस संबंध से एक नवीन जापान का आविर्भाव हुआ।"

"Just as one the old Japan was about to pass it come in to Contact Western World and a new powerful nation emerged."

• रूस का प्रयास – प्रथम प्रयास रूस की तरफ से किया गया। जापान रूस से नजदीक था। दोनों के स्वभाव भी मिलते थे। भौगोलिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के कारण दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए। इस संबंध में जहाज की घटना तात्कालिक कारण बनी। एक जापानी जहाज नष्ट हो गया तो रूस ने नाविक मदद कर राहत दिखलाई। इससे सहानुभूति का वातावरण बना। रूस का एक प्रतिनिधि राजनीतिक एवं व्यापारिक वातावरण एवं संबंध के लिए जापान आया। इस शिष्टमंडल को सफलता नहीं मिली। प्रयास जारी रहा। 1804 ई० में दूसरा रूसी मिशन जापान आया। इसको भी पूर्ण सफलता नहीं मिली।

• ब्रिटेन का प्रयास – ब्रिटेन भी जापान के साथ व्यापारिक संबंध के लिए इच्छुक था। ब्रिटेन और चीन में अफीमयुद्ध चल रहा था। चीन में अनेक सुविधाएँ मिल चुकी थीं। जापान के साथ संबंध बनाने के लिए एक ब्रिटेन का जहाज नागासाकी पहुँचा। दूसरी तरफ जापान अपना व्यापारिक एवं राजनीतिक दरवाजा बन्द रखा। (1813) ई० में ब्रिटेन ... दूसरा प्रयास किया गया। इस ...

~~प्रथम का शासन था। उसने एक पत्र भेजा था। विलियम~~
एवं हालैण्ड के शासकों में सम्राट के इसी पत्र के
कारण ब्रिटेन का व्यापारिक संबंध जापान के साथ
किया गया। जापान में इन गोरों लोकप्रिय नहीं
रही थी। इन देशों के अधीन कर जापान पर
विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। इस तरह जापान के दरवाजा
का फाटक मुख्य रूप से पश्चिमी देशों के लिए
बंद ही रहा एवं उन्हें विशेष सुविधाएँ नहीं दी गयी।

• ~~अमेरिका का आगमन~~ — ~~इस संबंध में~~ पेरी का आगमन
जापान पर सबसे ज्यादा दबाव अमेरिका के
तरफ से पड़ा। अमेरिकी युद्धपोतों के द्वारा वास्तविक
रूप में जापान का दरवाजा को पुनः खोल दिया
गया। विनायक ने लिखा है Opening of Japan
का श्रेय अमेरिका को है प्रशान्त महासागर में उनकी
रुचि बढ़ रही थी। रूसियों भी अपना प्रभाव
बढ़ाना चाहता था। 1846 ई० में एक अमेरिकन
जहाज संकट में फंस गया और जापान के एक
बन्दरगाह पर शरण लिया। जापान द्वारा इसके लिए
अनुमति नहीं दी गयी। इससे अमेरिका इस
दिशा में प्रभाव बढ़ाने के लिए उत्सुक हो गया।

• पेरी का आगमन — इस संदर्भ में पेरी का
आगमन ऐतिहासिक महत्व रखता है जापानी बन्दरगाह
पर उतरकर व्यापारिक संबंध के लिए प्रार्थना किया
जापान इसे ठुकरा दिया। 1853 ई० में मैथ्यू कालब्रेथ
पेरी को फिर जापान भेजा गया। पेरी अमेरिका
और चीन का चक्कर काटते हुए जापान पहुँचा
उसने पत्र भेजा कि अमेरिकी युद्धपोतों को
जापानी बन्दरगाह पर ठहरने दिया जाय। उसने
जापान के सम्राट को पत्र एवं उपहार भेंट किया।
उसने चेतावनी दिया कि अगले वर्ष शक्तिशाली
बेड़ा के साथ आयेगा

1854 ई० में पेरी पुनः जहाजों के साथ
आ पहुँचा। जल्दी आने के कारण यह था कि रूसी
जहाजी बेड़ा भेजा चुका था। पेरी जापान को रूस
एवं ब्रिटेन का प्रभाव क्षेत्र नहीं बनने देना चाहता था।
[illegible] से शोगून दुविधा में पड़ गया। उसने
सम्राट कुलीनों वर्तमान संकट को

विचारधारा उभर गया। इसमें एक पक्ष विदेशियों के विरुद्ध था। दूसरा पक्ष विदेशी देशों के साथ व्यापारिक संबंध एवं सम्पर्क को बढ़ावा देना चाहता था। इस पक्ष का तर्क था कि ऐसा कर हम पाश्चात्य देशों का मुकाबला कर सकते हैं। अन्त में यह सिद्धान्त मान लिया गया। 31 मार्च 1854 ई० में कानागावा की संधि हुई इसके साथ ही Opening of Japan का प्रथम चरण शुरू हुआ। कानागावा की संधि द्वारा अमेरिकी जहाज को ठहरने एवं व्यापार करने की अनुमति मिल गयी। शीमोदा में अमेरिकी दूत भी रहने लगा। यह भी निर्धारित हुआ कि जो भी सुविधा जापान में मिलेगी उतनी ही सुविधाएँ जापान को भी अमेरिका में मिलेगी। अमेरिकी जहाज नागासाकी, हैको शिमोदा में कोयला पानी लेंगे। अमेरिकी जहाज संकट पर जापान में शरण लेंगे। अमेरिका का सौभाग्य था कि उसके साथ जापान की पहली संधि हुई।

• यूरोपीय देशों से सम्बन्ध — जापान का दरवाजा खुलने के साथ ही अन्य देशों के साथ भी संधियाँ की गई। 1854 ई० में नागासाकी में ब्रिटिश अधिकारी स्टर्लिंग ने एक संधि की। 1855 में रूस के साथ भी एक व्यापारिक संधि की गई। डचों को भी विशेष सुविधाएँ दी गई 1856 ई० में एक सन्धि की गई इस तरह व्यापारिक एवं राजनीतिक संबंध ब्रिटेन, रूस एवं डचों के साथ भी शुरू हुआ।

जापान में टाउनसेंड एवं हैरिस की सन्धि — कानागावा के सन्धि के पूरक में यह सन्धि सिद्ध हुई जिसका श्रेय हैरिस को दिया जाता है। हैरिस 1856 ई० में अमेरिकी प्रतिनिधि बनकर जापान आया। जापानी अधिकारियों के साथ उसकी लम्बी वार्तालाप हुई। अन्त में उसे अपने लक्ष्य-प्राप्ति में सफलता मिली। जापान अमेरिका के साथ दूसरी सन्धि के लिए तैयार हो गया। इसी समय चीन की पराजय हुई इसका मनोवैज्ञानिक अनुकूल प्रभाव जापान पर पड़ा। फलस्वरूप 29 जुलाई 1858 में अमेरिका के साथ दूसरी सन्धि की गयी। यह अमेरिका के पक्ष में

सबसे महत्वपूर्ण सफलता थी। इसमें निम्नलिखित धाराएँ थी।—

1. शिमोडा, हाकोदाते, कानागावा, नागासाकी बन्दरगाह अमेरिकी जहाजों के लिए खोल दिये गये।
2. मोदो, ओसाका में विदेशियों को रहने की इजाजत मिली।
3. आयात-निर्यात की कर की दर निर्धारित की गयी।
4. अमेरिका जापान, अस्त्र, तकनीक देने का वचन दिया।
5. दोनों अपना-अपना दूत, एक प्रतिनिधि मंडल रखेंगे।
6. अमेरिका को जापान में धार्मिक स्वतंत्रता मिली।
7. 7 जुलाई 1882 में सन्धि पुनः दोहरायी जायेगी।

इसके साथ पुनः इसी तरह की संधियाँ इंग्लैंड, रूसियों, अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों के साथ की गयी। इससे पाँच जातियों के संधि करा जाता है फलस्वरूप काफी संख्या में विदेशी जापान में रहने लगे।

• संधियों का परिणाम — इन सन्धियों के द्वारा सदियों से बन्द जापान का दरवाजा खोल दिया गया। जापान के पार्थक्यवादी जीवन का अन्तमन समाप्त हो गया। इस क्रम में जापान की तोमिमारी रही। चीन के दरवाजा खोलने के क्रम में हिंसक युद्ध हुए इसके विपरीत जापान में इसके लिए किसी तरह का युद्ध नहीं लड़ा गया।

इसका श्रेय जापानी जनता की समझ शीलता और जापानी अधिकारियों की दूर दर्शिता को दिया जाता है। जापानी सम्मुराय एवं कानून की मर्यादा खंडित नहीं हुई। इस मामले में जापान की स्थिति चीन से भिन्न रही। जापान का द्वार खुलना जापान के लिए वरदान सिद्ध हुई। जापान को पश्चिमी देशों का ताकत का रहस्य खुल गया। जापान को पाश्चात्य क्रांति का पता चला। उनकी पाश्चात्य तकनीकी प्राप्त हुई इससे जापान का आधुनिकीकरण हुआ। जापान को एकीकरण मिल गयी। जापान

के विकास का मार्ग खुल गया। शीघ्र ही जापान एक महान शक्ति के रूप में उभर गया। जापान की व्यापारिक एवं औद्योगिक क्रांति हुई। जापान आत्मनिर्भर हो गया।

शोगून की बदनामी हुई। जापान में यह आवाज उठाई जाने लगी कि शोगून के शासन का अंत किया जाय। इससे मेइजी पुनः स्थापित हुई। सम्राट की शक्ति का पुनरुद्धार हुआ। इस तरह जापान का नवजागरण स्वीकार गया। यह जापान के लिए अभिशाप कम लेकिन वरदान ज्यादा मात्रा में साबित हुआ।